

موضوع الخطبة: مقتضيات الإيمان بالمصطفى صلى الله عليه وسلم

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/حفظه الله

لغة الترجمة: الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي (@Ghiras\_4T)

## उपदेश का शीर्षक:

### पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के तकाज़े

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात!ऐ मुसलमानों!अल्लाह तआला से डरो और उसका भय रखो,उसकी अज्ञाकारी करो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो के बंदों पर अल्लाह का यह कृपा है कि उसने उनके मध्य उनहीं में से एक संदेशवाहक भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़ कर सुनाता है और उनहें कुरान व हदीस सिखाता है। निसंदेह यह उस्से पश्चात खुली गुमराही में थे।पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के पंद्रह तकाज़े हैं:

1-आप के नाम और वंशावली से अवज्ञत होना,आप का वशावली इस प्रकार है:मोहम्मद बिन अबदल्लाह बिन अब्दुलमुत्तलिब बिन हाशिम बिन अबदे मनाफ बिन कोसैय बिन केलाब बिन मुरह बिन कअब बिन लोवैय बिन गालिब बिन फहर बिन मालिक बिन अलनज़र बिन कनाना बिन खोजैमा बिन मुदरिका बिन इलयास बिन मुज़िर बिन नज्ज़ार बिन अदनान।अदनान इसमाईल के वंश से थे और इसमाईल इब्बाहीम अलैहिस्सलाम के वंश से थे।इस समस्त वंशावली में आप का नाम पिता के नाम के साथ जनना भी प्रयाप्त है और वह इस प्रकार है:मोहम्मद बिन अबदुल्लाह।और यह कि आप कोरैश जनजाति से संबंध रखते थे।

2- पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का एक तकाज़ा यह है कि आप अपनी नबूव्वत (प्रवर्तन) के जिन प्रमाणों के साथ मबऊस (अवतरित )

हुए,उन पर ईमान लाया जाए,जो कि अति अधिक हैं,उनमें सबसे बड़े प्रमाण यह हैं: पवित्र कुरान का अवतरित होना,चांद का आपके "ईशारे से" दो टुकड़े होना,खोजूर की डाली का आपके प्रेम में बिलक बिलक कर रोना,आपके सामने खाने का तसबीह पढ़ना,आपकी ऊंगली के बीच से पानी का जारी होना,थोड़े से खाने का अधिक हो जाना और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भविष्य के प्रति गैबी मामलों की खबर देना।

3- पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तकाज़ा यह है कि आपकी नबूव्वत (प्रवर्तन) व संदेशवाहन पर ईमान लाया जाए और इस पर ईमान लाया जाए कि आप अल्लाह की ओर से भेजे गये सत्य पैगंबर हैं।

4- पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तकाज़ा यह भी है कि आप के अंतिम पैगंबर और अंतिम रसूल होने पर ईमान लाया जाए,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

(مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ)

**अर्थात:**( लोगो! ) तुम्हारे पुरुष में से किसी के पिता मोहम्मद नहीं किंतु आप अल्लाह के पैगंबर हैं और समस्त पैगंबरों को समाप्त करने वाले हैं।

हज़रत सौबान रज़िअल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"मेरी उम्मत में लगभग तीस झूटे (दावेदार) निकलेंगे,उनमें से प्रत्येक यह दावा करेगा कि वह नबी है,जबकि मैं अंतिम नबि हूं मेरे पश्चात कोई (दूसरा)नबी नहीं होगा..." ( इस हदीस को अबूदाऊद (4252) और अहमद 5/278 ने वर्णन किया है और अल्बानी ने सही कहा है,इसी प्रकार"अलमुस्नद"के शोधकर्ताओं ने भी इसे मुस्लिम के शर्त पर सही कहा है।)

हज़रत जाबिर रज़िअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"मेरी और मुझसे पश्चात के समस्त रसूलों का उदाहरण ऐसा है जैसे एक व्यक्ति ने एक घर बनाया और उसमें हर प्रकार की सजावट का प्रबंधन किया किंतु एक कोने में एक ईंट की जगह छूट गई।अब समस्त लोग आते हैं और घर को चारों

ओर से घूम कर देखते हैं और आश्चर्य करते हैं किंतू यह भी कहते हैं कि यहां एक ईंट क्यों न रखी गई?तो में ही वह ईंट हूं और में अंतिम पैगंबर हूं”

(इसे बोखारी 3535 और मुस्लिम 2286 ने रिवायत किया है।)

5— पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का एक तकाजा यह है कि यह ईमान लाया जाए कि आप की लाई हुई शरीअत पूर्व के समस्त शरीअतों को निरस्त करने वाली और उनका रक्षक है,जैसे ईसा और मूसा अलैहिमुस्सलाम की लाई हुई शरीअतें,अल्लाह का कथन है:

(وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيِّمًا عَلَيْهِ)

**अर्थात:**हमने आपकी ओर सत्य के साथ यह पुस्तक अवतरित की है जो अपने से पूर्व पुस्तकों की पुष्टि करने वाली है और उनकी रक्षक है।

6— पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान का तकाजा है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि आप के अवतरित होने के पश्चात अल्लाह तआला के निकट इसलाम धर्म के सेवा कोई धर्म स्वीकृत नहीं,इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह कथन है:

(وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ)

**अर्थात:**जो व्यक्ति इसलाम के अतिरिक्त और धर्म तलाश करे,उसका धर्म स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह आखेरत में हानी पान वालों में से होगा।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हदीस भी इस का प्रमाण है:“कसम है उसकी जिसके हाथ में मोहम्मद( सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम )का प्राण है।उस काल का (अर्थात मेरे समय और मेरे बाद तक) कोई यहूदी अथवा ईसाई”अथवा और कोई धर्म वाला”मेरा हाल सुने फिर ईमान न लाए उस पर जिस के साथ में भेजा गया हूं।(अर्थात कुरान) तो नरक में जाएगा”

(इसे मुस्लिम 153 ने अबूहोरैरा रज़िअल्लाहु अंहु से वर्णन किया है।)

7- पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तकाज़ा है कि इस पर ईमान लाया जाए कि आपने (अल्लाह के) संदेश को( संसार वालों तक)पहुंचा दिया और इसे पूरा कर दिया,और अपनी उम्मत को आलोकित राजमार्ग पर छोड़ कर (इस संसार से गये) इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह कथन है:

(الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتَمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا)

**अर्थात:**आज मैंने तुम्हारे लिए धर्म को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी करदी और तुम्हारे लिए इसलाम के धर्म होने पर राजी हो गया ।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत में इसका प्रमाण वह हदीस है जिसे बोखारी व मुस्लिम ने मसरूक़ से रेवायत किया है,वह कहते हैं:मैं मोमिनों की माता आइशा रज़िअल्लाहु अंहा के पास टेक लगा कर बैठा हुआ था,उन्हों ने कहा:ऐ अबू (पितो )आइशा! तीन चीजें ऐसी हैं कि उनमें किसी ने एक भी किया तो वह अल्लाह पर बड़ा आरोप लगाएगा।उनमें से एक यह ज़िक्र(प्रार्थना )की कि—जिसने यह सोचा कि अल्लाह ने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो चीजें उतारी हैं उनमें से कुछ चीजें मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने छिपा ली हैं । जबकि अल्लाह **कहता है:**

« يا أيها الرسول بلغ ما أنزل إليك من ربك »

“ जो चीज अल्लाह की ओर से तुम पर उतारी गई है उसे लोगों तक पहुंचादो”

(इसे बोखारी 4855 और मुस्लिम 177,286 ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के हैं)

अबूज़र रज़िअल्लाहु अंहु से वर्णित है,वह फरमाते हैं: “हमें मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस हाल में छोड़ा कि आकाश में जो पंक्ति अपने पर फरफराता है,उस्के प्रति भी आपने हमें कोई न कोई ज्ञान अवश्य दिया”

(इसे अहमद ने “अलमुस्नद”5/153 में वर्णित किया है और “अलमुस्नद”के शोधकर्ताओं ने इसे हसन कहा है)

सहाबा रजिअल्लाहु अंहु ने हज्जतुलविदा में यह गवाही दी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसलाम के प्रचार का कर्तव्य पूरा कर दिया,उनकी संख्या लगभग चालीस हजार थी,जब पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे कहा:में तुम्हारे समक्ष ऐसी चीज छोड़े जा रता हूं कि यदि तुम उसे बलपूर्वक पकड़े रहो तो कभी गुम्राह न होगे(वह है) अल्लाह तअ़ाला की पुस्तक और तुमसे (क़यामत में)

मेरे बारे में प्रश्न होगा तो फिर तुम किया कहोगे?"

तो उन सबने कहा कि:हम गवाही देते हैं कि निसंदेह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तअ़ाला का संदेश पहुंचाया और पैगंबरी का अधिकार पूरा किया और उम्मत का कलयाण किया।फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी तर्जनी(शहादत) की ऊंगली आकाश की ओर उठाते थे और लोगों की ओर झूकाते थे (अर्थात अपनी उंगली को ऊपर नीचे करते और लोगों की ओर ईशारा करते।ऐसा इमाम नौवी ने इस हदीस की व्याख्या में लिखा है।) और फरमाते थे कि ऐ अल्लाह!गवाह रहना, ऐ अल्लाह!गवाह रहना, ऐ अल्लाह!गवाह रहना,तीन बार (यही फरमाया और यूंही इशारा किया) 7(इसे मुस्लिम 1218 ने जाबिर रजिअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है।)

8-पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का एक तकाज़ा यह है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि आप समस्त मनुष्य एवं जिनों के लिए पैगंबर बना कर भेजे गये थे,अल्लाह का कथन है:

(قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا)

**अर्थात:**आप कह दीजिए कि ऐ लोगो!में तुम सब की ओर अल्लाह की ओर से भेजा हुआ हूं।

अल्लाह ने और फरमाया:

(وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ)

**अर्थात:**हमने आपको समस्त संसार वालों के लिए कृपा बना कर भेजा है।

सूरह अलजिन्न में इस बात का उल्लेख आया है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिनों को इसलाम की दावत दी,तो कुछ जिन्न आपके पास आये और

आपसे इसलाम की प्रतिज्ञा ली,इस संदर्भ में सूरह अलअहकाफ की कुछ आयतें नाज़िल हूईं,जोकि यह हैं:

(وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنصِتُوا فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُنذِرِينَ قَالُوا يَا قَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنزِلَ مِن بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَىٰ طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ يَا قَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ يَغْفِرَ لَكُمْ مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُجِزِّكُمْ مِّن عَذَابِ أَلِيمٍ)

**अर्थात:**याद करो!जबकि हमने जिनों की एक टोली को तेरी ओर आकशित किया कि वह कुरान सुनें,तो जब (पैगंबर के) पास पहुंच गये तो (एक दूसरे से) कहने लगे खामोश होजाओ,फिर जब पढ़ कर समाप्त हो गया तो अपने समुदाय को सूचित करने के लिए वापस लौट गये।कहने लगे ऐ हमारे समुदाय!हमने निसंदेह वह पुस्तक सुनी है जो मूसा(अलैहिस्सलाम) के पश्चात अवतरित की गई है जो अपने से पूर्व पुस्तकों की पुष्टि करने वाली है जो सत्य धर्म की और सत्य मार्ग की ओर मार्गदर्शन करती है।ऐ हमारे समुदाय!अल्लाह की ओर बोलाने वाले का कहा मानो,उस पर ईमान लाओ,तो अल्लाह तुम्हारे पापों को क्षमा प्रदान करेगा और तुम्हें पीड़ायुक्त यातना से शरण प्रदान कर देगा।

अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने समस्त लोगों को इसलाम की दावत दी,सर्वप्रथम सबसे निकट परिजनों और परिवार वालों को इसलाम की ओर बोलाया,फिर अरब,फारस और रूम के राजाओं को पत्र लिखे,हबशा के राजा नज्जाशी को पत्र लिखा,जिनों को इसलाम की दावत दी,दावत के मार्ग को आसान करने के लिए गज़वात“इसलामी युद्ध”किये,आपके पश्चात आपके सहाबा“साथी गण”आपके मार्गदर्शन पर चले,और उन्होंने भी अल्लाह की ओर बोलाने का कर्तव्य पूरा किया,कुरान व हदीस की सुरक्षा की,नासतिकों से युद्ध किया,नबूवत का दावा करने वालों से युद्ध किया,संसार भर में विजय का ध्वज लहराया,इस प्रकार सीरिया,मिस्त्र और मोराकश को प्राजित किया खोरासान पर विजय का ध्वज लहराया,हर जगह तौहीद(एकेश्वरवाद/अद्वैतवाद) को प्रचलित किया,बुतों को ध्वस्त किया और इसलाम की सहायता व विजय के लिए अनमोल कार्य किये,जोकि इतिहास और हदीस की पुस्तकों में मौजूद है,अल्लाह उनपर रहमत अवतरित करे और उन्हें

उच्च परिनाम प्रदान करे।उन्होंने और उनके पश्चात के वंशों ने जो अनमोल कार्य किये,सबको कियामत के दिन उनके पुण्य में शामिल फरमाए।

9— पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का एक तक्ज़ा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि आप का तरीका सर्वोच्च तरीका है,हज़रत जाबिर रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने उपदेश में फरमाया करते थे:“प्रशंसाओं के पश्चात,सर्वोच्च बात अल्लाह की पुस्तक की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज(धर्म में) अविष्कार की गया नवाचार हैं और प्रत्येक नवाचार गुमराही है” (इसे मुस्लिम 1218 ने हज़रत जाबिर रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।)

10— पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक्ज़ा यह भी है कि आप के अधिकारों को पूरे किये जाएं, जिन में सर्वप्रथम आप की पुष्टि करना और आप के लिए हुए धर्म को मानना,इस प्रकार कि आपके आदेश को माना जाए और आपने जिन चीजों से रोका है उस्सा बचा जाए,इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम करना भी आपके अधिकारों में से है।

11— पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक्ज़ा यह भी है कि आपके मनुष्य होने पर ईमान लाया जाए और इस बात पर कि आप अल्लाह के बंदे हैं जिनकी पूजा करना उचित नहीं,अनेक आयतों के अंदर भी इसको स्पष्ट किया गया है, उदाहरण स्वरूप सूरह इसरा में अल्लाह तआला का यह कथन है:

(سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى)

**अर्थात:**पवित्र है वह अल्लाह तआला जो अपने बंदे को रात ही रात में मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़सा तक ले गया।

हज़रत उमर रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है,वह कहते हैं:मैंने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना:“मुझे मेरे रूतबे से अधिक ना बढ़ाओ (अर्थात मेरी प्रशंसा करने में।देखें:(फतहुल्बारी)में उपरोक्त हदीस की व्याख्या।) जैसे ईसा बिन(पुत्र)मरयम अलैहेमा अलसलाम को ईसाइयों ने उनके रूतबे से अधिक बढ़ा दिया है।मैं तो केवल अल्लाह का बंदा हूं,इस लिये यही कहा करो(मेरे प्रति) कि मैं अल्लाह का बंदा और

उसका रसूल हूँ”(इसे बोखारी (3445),अहमद 1/23 और दारमी (2786) ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द बोखारी ने रिवायत किया है।)

और अल्लाह ने अपने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया:

(قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ)

**अर्थात:**आप कह दिजिये कि में तो तुम जैसा ही एक मनुष्य हूँ।(हां)मेरी ओर वह्य की जाती है कि सबका प्रमेश्वर केवल एक ही अल्लाह है।

आपके मनुष्य होने पर ईमान लाने से यह अनीवार्य होजाता है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि आप और आपके अतिरिक्त अन्य समस्त अंबेया व रोसुल(संदेशवाहक गण)भी रूबूबियत

**व उलूहियत** के किसी भी गुन के मालिक नहीं हैं,अल्लाह तआला ने अपने नबी को यह आदेश दिया कि आप लोगों से कह दें:

(قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبِ لَاسْتَكْتَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ  
إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ)

**अर्थात:**आप फरमा दीजिये कि में स्वयं ही अपने आप के लिए किसी लाभ का अधिकार नहीं रखता और न किसी हानी का,मगर उतना ही जेतना अल्लाह ने चाहा हो और यदि में गैब की बातें जानता होता तो में ढेर सारा लाभ प्राप्त कर लेता और मुझे कोई हानी न पहुंचती,में तो केवल डराने वाला और खुशखबरी देने वाला हूँ उनलोगों को जो ईमान रखते हैं।

यह और इस जैसी अन्य आयतों से प्रमाणित होता है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मनुष्य थे,और आप रूबूबियत व उलूहियत के किसी भी गुन के मालिक नहीं थे,आप न तो गैब का ज्ञान रखते थे,न संसार में कोई परिवर्तण कर सकते थे और न दोआएँ कबूल करते थे,बल्कि हमारे जैसा अल्लाह के बंदे थे,किंतू अल्लाह ने आपको संदेशवाहन प्रदान किया था और यही स्थिति अन्य समस्त पैगंबरों कि भी थी।

12—पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तकाज़ा यह भी है कि आप के समस्त मानवीय एवं नैतिक गुणों एवं विशेषणों पर ईमान लाया जाए,जैसे आप

की लंबाई,रूप,चाल ढाल,आपके चेहरे के गुण और आप की मानवीय सुंदरता,इसी प्रकार वे उच्च व्यवहार जो अल्लाह ने आपको प्रदान किया था और आपके अतिरिक्त किसी और के अंदर नहीं पाए गए,जैसे सच्चाई,अमानतदारी,कृपा व दया,परिजनों के साथ उच्च व्यवहार और क्षमा करना आदी,विद्वानों ने आपके मानवीय एवं नैतिक गुणों एवं विशेषणों के विशय में अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

14— पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान का तकाजा यह भी है कि आपके अधिकार में जो व्यक्तिगत और धार्मिक गुण आये हैं,उनपर ईमान लाया जाए,व्यक्तिगत गुणों का उदाहरण नबवी छाप है,जो कि आप के बाएँ कंधे के पास मांस का उभरा हुआ भाग था,जो कबूतर के अंडे के बराबर था।

आप के व्यक्तिगत गुणों का एक उदाहरण यह भी है कि आपकी आंखें सोती थीं किंतु हृदय नहीं सोता था।

उसका उदाहरण यह भी है कि आपके शरीर से निकलने वाले पसीने और (मूंह से निकलने वाले)राल में अल्लाह ने बरकत पैदा फरमाया था।

रही बात आपके धार्मिक गुणों की तो इसके कुछ उदाहरण यह हैं:आपके विरासत (पैतृक सम्पत्ति )का कोई हकदार नहीं,आप पर और आपके अहलेबैत (परिवार वालों) पर सदका(दान) हराम है,आपके लिए यह वैध था कि लगातार एक से अधिक रोज़ा रखें और बीच में इफतार न करें,आपको अल्लाह ने चार से अधिक विवाह की अनुमति दी थी,और उस महिला से आपको विवाह का विशेष अनुमति प्राप्त था जो अपने आपको आपके लिए हैबा (दान/समर्पित) करदे,इसी प्रकार आपका उसी स्थान पर दफन होना जहां आप का निधन हुआ,इनके अतिरिक्त और भी गुण हैं जो आपके लिए विशष हैं।

15— पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तकाजा यह भी है कि आपके मासूम होने पर ईमान लाया जाए,(शब्दकोश में इसमत का अर्थ होता है:रोकना और रक्षा करना।देखें:(लेसानुलअरब)आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पांच चीजों से मासूम थे:

1—आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम धर्म के प्रचार प्रसार में गलती,भूल चूक और (किसी बात को)छुपाने से मासूम थे,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

(وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ)

**अर्थात:** वह अपनी इच्छा से कोई बात कहते हैं। वह तो केवल **वहय** होती है जो उतारी जाती है।

अल्लाह ने और फरमाया:

(يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَغْتَ رِسَالَتَهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ)

**अर्थात:ऐ** रसूल! जो कुछ भी आप की ओर आपके रब की ओर से नाज़िल किया गया है पहुंचा दिजीए। यदि आपने ऐसा न किया तो आप ने अल्लाह की रेसालत (संदेशवाहन) को अदा नहीं किया, और आप को अल्लाह तआला लोगों से बचालेगा।

2—आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मासूम होने का एक भाग यह भी है कि आप शिरक (**बहूदेववाद**) करने से मासूम थे, बेसत (संदेशवाहक) बनने से पूर्व भी आप शिरक से मासूम रहे, सत्य नोसूस (धार्मिक) पाठें इस बात पर साक्ष्य हैं कि आप ने कभी किसी प्रतिमा के सामने न तो सजदा किया, न उसे (आशीर्वाद के लिए) हाथ लगाया, और न इस जैसी कोई ऐसी शिरकिया (बहूदेववादीय) गतिविधि में भाग लिया जो आप के समुदाय के लोगों किया करते थे, आप अपने स्वभाव के अनुसार अल्लाह से अवगत थे, कई सालों तक गारे हिरा में जाकर अल्लाह की पूजा करते और उसकी पूजा में किसी को साझी नही ठहराते, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अल्लाह तआला की इस तौहीद (एकेश्वरवाद) पे स्थिर रहना कोई आश्चर्य का विषय नहीं, क्योंकि अल्लाह तआला ने आपके अंदर से शैतान का भाग दो बार निकाला, प्रथम जब आप छोटे थे और द्वितीय जब आप बड़े होगए और आपके साथ शक्के सदर (सीना चीरने का) घटना हुआ।

3—आपकी इसमत (मासूम) होने का एक भाग यह भी है कि आप कबीरा गूनाहों (बड़े पापों) से मासूम थे, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनी इस पर साक्ष्य है, चाहे संदेशवाहन से पूर्व हो अथवा उसके पश्चात, क्योंकि आपने कभी शराब को मूंह न लगाया, न ही आपने कभी किसी महिला को हाथ लगाया, इस्से आगे बढ़ना तो दूर की बात, और न ही आपने कभी झूट बोला, जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: "मैं केवल सत्य ही बोलता हूँ", आपसे बड़े पाप कैसे हो सकता था जबकि

आपने अपने सहाबा से कहा:“अल्लाह की क़सम!में तुममें सबसे अधिक अल्लाह से डरने और उसका तक्वा अपनाने वाला हूँ”(इसे बोखारी5063 ने रिवायत किया है)

कुरतुबी रहीमहुल्लाह लिखते हैं:इस पर सभों की सहमति है कि अंबेया एकराम समस्त प्रकार के पापों के साथ उन छोटे पापों से भी मासूम थे जिनके अंदर अश्लीलता पाई जाती है।

4—आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मासूमियत का एक भाग यह भी है कि आप जिस वंश से थे,वह वंश बलातकार से सुरक्षित था,अल्लाह तआला ने हमारे नबी के वंश को पूर्व इस्लामी युग के बलातकार से सुरक्षित रखा था,चाहे वह पिता की ओर से हो अथवा माता की ओर से,आपका जन्म इस्लामी निकाह के तरीके पे आयोजित होने वाले निकाह से हुआ था।(हाफिज़ हकमी की पुस्तक(मआरेजुल क़बूल)से हलके हेरफेर के साथ नकल किया गया है,अध्याय:मोलिदोहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम,पृष्ठ संख्या(1051),प्रकाशक:दारो इब्नुलकय्थिम, दम्माम।)

इसका प्रमाण पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हदीस है जिसे इब्ने अब्बास रजीअल्लाहु अंहु ने रिवायत किया है:“मेरे माता.पिता के बीच कभी अवैध संबंध न था,अल्लाह ने मुझे पवित्र कोख में पवित्रता के साथ मुनतकिल किया,जब भी दो डालियों ( खानदानों) का आपस में संबंध हुआ तो में उनमें सबसे अच्छा था” ( इस हदीस को अबू नईम ने (दलाइलुन्नबूवत) :24 में विभिन्न माध्यमों से रिवायत किया है और सियूती ने (अलखसाइस अलकुबरा) :1 / 62,66 में इसके साक्ष्यों का उल्लेख किया है:(हुकूक अलनबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अला उम्मतेहि) डाक्टर मोहम्मद बिन खलीफा अलतमिमी,प्रकाशक:मकतबा अजवाउलसलफ |रियाज़:138)

15—आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मासूमियत का एक भाग यह भी है कि आप बुरे छवी से मासूम थे, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उच्च चरित्र पर बात की जाए तो बात बहुत लेबी होजाएगी,एतना कहना ही प्रयाप्त होगा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अंदर समस्त उत्तम व्यवहार पाए जात थे और आप समस्त बुरे चरित्र से पवित्र थे,इस विशय में हमारे लिए अल्लाह तआला का यह कथन प्रयाप्त है जिसके संबोधक पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं:

(وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ)

**अर्थात:**निसंदेह आप बड़े "उत्तम चरित्र पर हैं।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के यह पंद्रह तकाजे हैं,इन तकाजों पर ईमान लाने और इन पर अमल करने में अल्लाह हमारी सहायता करे,और हमें उनलोगों में शामिल फरमाए जिन्होंने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया,आपकी सहायता की और उस आलोक की पैरवी की जिसके साथ आप भेजे गये थे,वही लोग सफल हैं।

अल्लाह तआला कुरान की बरकतों से हमें और आप को लाभ पहुंचाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और हिकमतों पर आधारित प्रामर्शों ले लाभ पहुंचाए,में अपनी यह बात हकते हुए अल्लाह तआला से आप सब के लिए समस्त प्रकार के पापों से छमा प्राप्त करता हूं,आप भी उस्से छमा प्राप्त करे,निसंदेह वह अति तौबा स्वीकारने वाला और छमा प्रदान करने वाला है।

## द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

आप यह भी जान लें—अल्लाह आप पर कृपा करे—कि अल्लाह तआला ने आप को एक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

**अर्थात:**अल्लाह तआला और उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: "तुम्हारे सबसे अचछे दिनों में से शुक्रवार का दिन है,उसी दिन मनु पैदा किये गये,उसी दिन उनकी आत्मा निकाली गई,उसी दिन सूर फूंक जाएगा,(अर्थात सूर में दूसरी बार फूंक मारा जाएगा,इस्का मतलब वह सूर है जिसमें इसराफील फूंक मारेंगे,यह वह देवदूत हैं जिनको सूर में फूंक मारने पर नियुक्त किया गया है,जिसके पश्चात समस्त मुर्दा अपनी कबरों से उठ खड़े होंगे।) उसी दिन चीख होगी।(अर्थात जिससे दुनयावी जीवन के अंत में लोग बेहोश होकर गिर पड़ेंगे और सब के सब मर जाएंगे,यह बेहोशी उस समय उतपन

होगी जब सूर में बहली बार फूंक मारा जाएगा,दो फूंक के मध्य में चालीस साल का अंतर होगा।) इसलिए तुमलोग उस दिन मुझ पर अधिक से अधिक दरूद भेजा करो,क्योंकि तुम्हारा दरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है"। (इसे नेसाई (1373), अबूदाऊद (1047),इब्ने माजा (1085) और अहमद 4/8 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सहीअबूदाऊद में और मुस्नद के शोधकर्ताओं ने (हदीस:16162 )के अंतर्गत इसे सही कहा है।)

ए अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोहम्मद पर रहमत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़यामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेवादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना। उन्हें उनके प्रजाओं के लिए रहमत बना दे।

हे अल्लाह!जो हमारे प्रति,इस्लाम और मुसलमानों के प्रति बुरा भाव रखे तू उसे खुद में ही वयस्त करदे,और उसके चाल व फरेब को उसके लिए बावले जान बना।

हे अल्लाह!मुसलमानों को जो कठिनाई पहुंची उसकी गंभीरता को तेरे सेवा कोई नहीं जानता,हे अल्लाह!हमसे इस कठिनाई को दूर फरमा दे,हम मुसलमान हैं,हे अल्लाह!इस महामारी से जिन लोगों का मृत्यु हो गया है,उन पर कृपा फरमा,और उनमें जो रोगी हैं,उन्हें स्वास्थ्य प्रदान कर,हे अल्लाह!हम तेरी पनाह चाहते हैं तेरी नेमत के समाप्ति से,तेरे कृपा के हट जाने से,तेरे अचानक यातना से और तेरी प्रत्येक प्रकार की नाराजगी से।

हे अल्लाह हम तेरी पनाह चाहते हैं कुष्ठ रोग से,पागलपन से,कोढ़ से और बूरे रोग से।

हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा,हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा,हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा ।

हे हमारे पालनहार!हमें नेकी दे और आखेरत में अच्छाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर ।

ऐ अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआला न्याय का,भलाई का और परिजनों के साथ उच्च व्यवहार का आदेश देता है और निर्लज्जता के कामों,ओछ गतिविधियों और अन्याय से रोकता है ।वह खुद तुम्हें प्रामर्श कर रहा है कि तुम नसीहत प्राप्त करो ।इस लिए तुम अल्लाह तआला को याद करो,वह भी तुम्हें याद करेगा,उसके आशीर्वदों पर उनका आभार व्यक्त करो अल्लाह तुम्हें और देगा,निसंदेह अल्लाह तआला का ज़िक्र सबसे बड़ी चीज है,अल्लाह तुम्हारे समस्त आमाल से अवगत है ।

**लेखक:**

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

५ शाबान १४४२ हिजरी

जूबैल, सऊदी अरब

**अनुवाद:**

फैजुर रहमान हिफजुर रहमान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com